ओम् शान्ति 27-3-21 मधुबन

दादी जानकी जी की प्रथम पुण्य तिथि पर विशेष स्नेह श्रंधाजलि कार्यक्रम - शान्तिवन

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा विश्व कल्याण की सेवा पर उपस्थित, त्याग, तपस्या और सेवा द्वारा परमात्म दिल तख्तनशीन बनने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हम सबकी अति स्नेही, बापदादा के दिलतख्त पर विराजमान रहने वाली, पूरे ब्राह्मण परिवार की शान, त्याग तपस्या की मूर्त आदरणीय दादी जानकी जी (पूर्व मुख्य प्रशासिका) उन्हें आज अपने भौतिक शरीर का त्याग किये हुए 1 वर्ष पूरा हो रहा है। उनकी प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर देश विदेश के कुछ भाई बहिनें उन्हें स्नेह श्रंधाजलि, पुष्पांजलि अर्पित करने शान्तिवन परिसर में पहुंचे हुए हैं। आज सवेरे 7.00 बजे उनकी यादगार में बने हुए सुन्दर ''शक्ति-स्तम्भ'' का लोकार्पण वरिष्ठ बहन भाईयों ने विशेष मौन में रखकर पुष्प हार अर्पित करके किया। उसके पश्चात आये हुए सभी भाई बहिनें भी पुष्प हार अर्पित करते, दादी जी के सिटिंग रूम उनकी स्मृतियों को दिल में समाये हुए 10.30 बजे डायमण्ड हाल में एकत्रित हुए। जहाँ मुख्य बड़ी बहिनों ने तथा कुछ वरिष्ठ भाईयों ने दादी जी के अंग-संग के बहुत सुन्दर अनुभव सुनाये। उसके पश्चात दोपहर में रूकमणि बहन ने प्यारे बापदादा को दादी जी के निमित्त विशेष भोग स्वीकार कराया। कुछ पलों के लिए दादी जी सभा में पधारी तथा सभी को मीठी दृष्टि तथा फल फूल देते हुए नज़र से निहाल किया। उसके पश्चात सन्देशी ने जो वतन का सन्देश सुनाया वह इस प्रकार है:-

आज बाबा के पास वतन में भोग लेकरके पहुंची तो देखती हूँ, दादी एकदम बाबा के करीब बैठी है। जाने के साथ सभी भाई-बहनों की याद दी। बाबा कहने लगे बच्ची, दुनिया में दो चीज़ें होती हैं - एक गम होता है, दूसरा खुशी होती है। आज विशेष वतन में बाबा के पास बच्ची के निमित्त यादें आ रही हैं। बहुत ही तेजी से श्रेष्ठ संकल्प की याद बाबा तक पहुंच रही है। उस याद के साथ ही बाबा ने बच्ची को, दादी को वतन में इमर्ज कर लिया है। फिर मैंने कहा कि बाबा जब सभी याद कर रहे हैं तो याद के रिटर्न में कुछ देना भी होता है, कुछ करना भी होता है। तो बाबा बहुत मीठी दृष्टि से मुस्कराते हुए कहने लगे बच्ची, बाप को भी इसी याद के साथ सभी ने अपने स्नेह में बांध लिया है। फिर जैसेकि मैं वतन में सो गई, मुझे पता ही नही था, मैं कहा हूँ। (थोड़े समय के लिए दादी जी सभा में पधारी और सबको नजर से निहाल किया) कुछ समय के बाद दादी बाबा के साथ चक्कर लगाकर पहुंच गई। तो मैंने कहा दादी आप कहाँ चले गये थे!

तो बाबा ने कहा याद के रिटर्न में कुछ देना होता है, तो बाबा साकार में बच्ची को लेकर गये थे। बाबा ने फिर सभी को वतन में इमर्ज किया और कहा सभी ब्राह्मण परिवार की नज़र, विशेष दादियों

की तरफ है क्योंकि आदि रत्न हैं, देश विदेश में बच्ची ने अथक बनकर बहुत सेवायें की है। यह मार्च मास तो दादियों का विशेष यादगार बन गया है। उस दादी का (गुल्जार दादी का) 12 वां दिन मनाया और इस दादी का बारह मास मना रहे हैं। यह भी संगम के समय आपसी प्रेम, प्यार का सूचक है। साकार में भी दादियों का बहुत स्नेह रहा है। बाबा ने कहा वतन में भी इन दादियों का संगठन बन गया है। तो जब बाबा ने कहा संगठन बन गया है। तो जानकी दादी के साथ, गुल्जार दादी, प्रकाशमणि दादी, चन्द्रमणी दादी सभी मुख्य दादियां इमर्ज हो गई। बाबा ने कहा अभी वतन में भी यह संगठन स्थापना के संकल्प का मजबूत होता जा रहा है। अभी स्थापना का कार्य बहुत तेजी से सम्पन्न होगा। इसी कार्य के निमित्त शुरू से दादियां बनी हैं, तो अब यह कार्य बहुत जल्दी सम्पन्न होगा।

बाबा आप सभी बच्चों को भी यही इशारा दे रहे हैं कि अभी अति सूक्ष्म और फास्ट जाने का समय है। कोई भी बात में बच्चे गफलत ना करें, अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ का ध्यान रखें।

फिर तो जैसे बाबा और दादियों के आगे भोग रखा था तो बाबा ने सभी दादियों को बहुत प्यार से, स्नेह के साथ मधुबन का भोग स्वीकार कराया। बाबा ने कहा देखो, यह भोग बनाने वाले, सजाने वाले और लाने वाले कितना प्यार से सेवा करते हैं। तो आज उन बच्चों को भी याद देना जिन्होंने भोग तैयार किया है, थाली सजाई और बाबा के सामने भोग आया है। बाबा ने देश-विदेश के बच्चों को भी विशेष याद दी। बाबा ने कहा, आज सभी एक ही लक्ष्य लेकर बैठे हैं, दादी तो अपने में मस्त है। जैसे साकार में दादी भागती रहती थी, तो आज के दिन हर एक के दिल में विशेष दादी और बाबा की याद समाई हुई है। ऐसे कहते बाबा ने, दादियों ने सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी यादप्यार दी, यादप्यार लेते हुए मैं नीचे पहुंच गई। ओम् शान्ति।